

डॉ. अगस्त कोकिल, नीतिवचन, सत्र 6

© 2024 अगस्त कोकिल और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकिल हैं। यह सत्र संख्या छह है, जीवन के वृक्ष के रूप में बुद्धि। नीतिवचन 3.13-20.

नीतिवचन पर हमारे व्याख्यानों में आपका स्वागत है।

हमने जीवन के लिए ज्ञान के संदर्भ में माता-पिता द्वारा बच्चे के साथ की जाने वाली कई छोटी-छोटी बातचीत पर चर्चा की है, इसका पालन क्या करना है, और ज्ञान का वह तरीका जिससे आप उस जीवन को प्राप्त कर सकते हैं जो आप चाहते हैं पास होना। लेकिन ये बातचीत विभिन्न व्यवधानों से बाधित होती है। इनमें से एक अंतराल नीतिवचन अध्याय तीन में होता है, और यह श्लोक 13 से 20 तक है, जहां ज्ञान को जीवन का वृक्ष कहा जाता है।

अब, जीवन के वृक्ष के रूप में ज्ञान की यह तस्वीर कुछ विचारणीय है क्योंकि जीवन का वृक्ष नीतिवचन में फिर से दिखाई देने वाला है जैसा कि हम अपने भविष्य के व्याख्यानों में देखेंगे। लेकिन साथ ही, जीवन के वृक्ष की अवधारणा कुछ ऐसी चीज़ है जो उन सभी तरीकों के लिए मौलिक है जिनके लिए भगवान ने अपनी रचना और हमारे जीवन को इसके भीतर कार्य करने का आदेश दिया है, जिसे ज्ञान कहा जा सकता है। और हम अध्याय आठ में इस पर आएंगे।

तो, नीतिवचन अध्याय तीन, श्लोक 13 से 20 तक का यह छोटा खंड वास्तव में भविष्य के अध्यायों से संबंधित है। अब, जीवन के वृक्ष का विचार नीतिवचन में शुरू नहीं होता है। इसे यहाँ उन लोगों को परिभाषित करने के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो धन्य हैं।

जैसा कि हम देखेंगे, जो लोग धन्य हैं वे वे हैं जिन्होंने ज्ञान सीखा है, जिन्होंने उस प्रकार का चरित्र सीखा है जो ईश्वर द्वारा अनुमोदित है। वे ही धन्य कहलाते हैं। वे ही हैं जिनके पास बुद्धि है, और बुद्धि यहां मोतियों से भी अधिक बहुमूल्य है।

वह चाँदी से भी अधिक वांछनीय है। वह तुम्हें लम्बी आयु प्रदान करती है। वह जीवन का वृक्ष है।

श्लोक 18 में, उन सभी के लिए जो उसे समझते हैं, वह है, उन सभी के लिए जो उसे पाते हैं, अर्थात् वे सभी जो ज्ञान पाते हैं, उन्हें धन्य कहा जा सकता है। यह एक बहुत ही खास श्रेणी है। यह केवल बुद्धिमानों पर लागू होता है।

ये वही हैं जो प्रभु का भय जानते हैं। दूसरों को आशीर्वाद नहीं मिलता। बस यही लोग धन्य हैं।

तो जीवन का वृक्ष क्यों? मैं चाहता हूँ कि हम बाइबल में जीवन के इस वृक्ष के बारे में थोड़ा पीछे जाकर सोचें क्योंकि अतीत में जीवन का एक वृक्ष है। भविष्य में जीवन का एक वृक्ष है, लेकिन वर्तमान में भी जीवन का वृक्ष है, और वह है ज्ञान। अब अतीत के जीवन के वृक्ष के बारे में हम

उत्पत्ति अध्याय 2 से जानते हैं। परमेश्वर ने बगीचे के बीच में दो पेड़ लगाए, जीवन का पेड़ और ज्ञान का पेड़।

अब जीवन के वृक्ष को हमें सदैव यह बताना था कि ईश्वर जीवन का, समस्त जीवन का स्रोत है। ब्रह्मांड जीवन से परिपूर्ण है, लेकिन जीवन ब्रह्मांड में जन्मजात नहीं है। ईश्वर हमें जो जीवन देता है उसके अलावा ब्रह्मांड केवल खनिज है।

यह और कुछ नहीं है। ईश्वर जो जीवन देता है वह कुछ ऐसा है जो पदार्थ और खनिजों से कहीं अधिक सामान्य दुनिया बनाता है, चाहे वह पौधे हों, जानवर हों या लोग हों। लेकिन लोगों के लिए बगीचे में हमेशा एक अनुस्मारक होना चाहिए।

जीवन कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो आपके पास स्वाभाविक रूप से है या जिसे आप नियंत्रित कर सकते हैं। जीवन वह चीज़ है जो ईश्वर से आती है, और जैसा कि हम भजन 104 में सीखते हैं, ईश्वर ने सांस से सांस या दिल की धड़कन से दिल की धड़कन प्रदान की है। अब ज्ञान के वृक्ष को, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, यह जानने के ज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया था कि क्या अच्छा है या हर चीज़ का ज्ञान।

और निःसंदेह यह हमारे पास नहीं है। इसलिए, यदि हम ज्ञान के इस वृक्ष को पकड़ना चाहते हैं और जैसा कि सर्प ने कहा है, अच्छे और बुरे को जानते हुए, भगवान के समान बनने का प्रयास करते हैं, तब हम गलत रास्ते पर जा रहे हैं। भविष्य में जीवन का एक वृक्ष है।

और निःसंदेह, हम प्रकाशितवाक्य में इसके बारे में पढ़ते हैं, और यह हमारे सभी रहस्योद्घाटन का निष्कर्ष है जो ईश्वर से आता है। और हमारे सभी रहस्योद्घाटन का निष्कर्ष अनिवार्य रूप से उस चीज़ की पूर्ति और पूर्णता है जिसे भगवान ने शुरू किया था। और हम इसके बारे में प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 में पढ़ते हैं, जहाँ एक नदी है और नदी के किनारे जीवन का वृक्ष है और वह वर्ष के हर महीने में अपना फल देता है।

दूसरे शब्दों में, कोई मृत्यु नहीं है। जीवन निरंतर है। यह सुलभ है।

यह एक ऐसा वृक्ष है जो उन लोगों के लिए सुलभ है जिन्हें परमेश्वर ने छुटकारा दिलाया है, जिन्हें उसने जीवन दिया है, और जिनके पास धुले हुए वस्त्र हैं। और यह सत्य के शब्दों से लिया गया है, जिस पर जॉन बार-बार जोर देता है। इसलिए इस सत्य को नकारना जीवन के वृक्ष तक पहुंच को नकारना है।

लेकिन वर्तमान में, हमारे पास वहां वर्णित एक आशीर्वाद है जैसा कि आप इसे हिब्रू शब्द, अशेराह द्वारा देखते हैं। यह श्लोक 13 का पहला शब्द है। अब, यह भजन अध्याय 1 श्लोक 1 का भी पहला शब्द है, जहाँ यह कहा गया है, धन्य वह व्यक्ति है जो पापियों के मार्ग पर नहीं चलता या ठट्टों में नहीं बैठता, परन्तु जिनकी प्रसन्नता प्रभु की शिक्षा से होती है, जो इस पर विचार करते हैं, इस पर मनन करते हैं, वह निरन्तर उनके मन पर शासन करता है।

तो, अशोरा क्या है ? वह धन्यता क्या वर्णन कर रही है? यह एक चरित्र का वर्णन कर रहा है. यह एक प्रकार के व्यक्ति का वर्णन कर रहा है, उस प्रकार का व्यक्ति जो तिरस्कार करने वाले की सीट से बचता है , जिसे नीतिवचन में अक्सर संदर्भित किया जाता है, और जो टोरा, भगवान की शिक्षा को चुनता है, इसलिए उसका जीवन, वास्तव में, उसका जीवन फलदायी हो जाता है। यही वह सौभाग्य है.

और यीशु ने अपने राज्य के बारे में बात करने के लिए उस शब्द को चुना। किस प्रकार का व्यक्ति उसके राज्य में रहने के योग्य है? खैर, वह न्यू टेस्टामेंट के आधुनिक हिब्रू अनुवाद में धन्य शब्द का उपयोग करता है। अशोरा स्वाभाविक रूप से वह शब्द है जिसका वे उपयोग करेंगे।

हमारे पास ग्रीक में इसका समतुल्य नहीं है, लेकिन विशेष रूप से हमारे पास अंग्रेजी में यह नहीं है। तो, ग्रीक में, यह मकरस है, और हम कभी-कभी इन्हें मकरिज्म कहते हैं , ये वर्णन जो यीशु यह कहते हुए देते हैं कि यह उस प्रकार का व्यक्ति है जो धन्य है। और वे कौन हैं? आत्मा में गरीब.

दूसरे शब्दों में, वे नहीं सोचते कि उनके पास सभी ज्ञान तक पहुंच है और वे स्वयं निर्णय ले सकते हैं कि क्या अच्छा है। वे शोक मनाते हैं. क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि वे हमेशा वह नहीं करते जो अच्छा है।

वे नम्र हैं क्योंकि वे विनम्र हैं। उनमें प्रभु का भय है। वे धार्मिकता के भूखे हैं।

निःसंदेह, नीतिवचन इसी का वर्णन कर रहे हैं। तो यह इस वृक्ष की कृपा है। यदि हम इसे समझ सकें तो यह वृक्ष यह सौभाग्य प्रदान करता है।

और जैसा कि हम नीतिवचन 3 श्लोक 19 और 20 में पाते हैं, यह बुद्धि ही है जो हमें ईश्वर की दुनिया को समझने में सक्षम बनाती है। यह ज्ञान ही है कि प्रभु ने संसार की नींव रखी, और समझ में स्वर्ग की स्थापना की। यह उसी की जानकारी में है कि गहराइयों का निर्माण हुआ और ऊपर से बादल ओस देते हैं।

दूसरे शब्दों में, प्राकृतिक व्यवस्था की संपूर्ण कार्यप्रणाली का रहस्य जिसे हम जानते हैं वह इस व्यवस्था का हिस्सा है जिसे भगवान ने स्वयं बनाया है, और इसे ज्ञान के रूप में वर्णित किया जा सकता है। ईश्वर ने यह आदेश दिया है कि जीवन कैसा होना चाहिए। अब जीवन के वृक्ष का यह विचार कुछ ऐसा है जो टोरा को जानने के लिए एक प्रतीक बन गया है, जीवन के मार्ग पर चलने और धार्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए एक प्रतीक बन गया है।

और इसलिए, इसे मेनोराह द्वारा दर्शाया गया है। अब जैसा कि आप इस फोटो में देख सकते हैं, मेनोराह वह दीपक था जो मंदिर में था। और मन्दिर का दीपक वास्तव में सात दीपकों का एक संग्रह था।

और सातों के कुल में जीवन का प्रावधान था। और हां, जब आप इसे वहां देखते हैं, तो यह एक पेड़ जैसा दिखता है। तो वास्तव में यह पेड़ उस चीज़ का प्रतीक है जिसके बारे में यहूदी लोग मानते थे कि यह जीवन देता है।

अब, जैसा कि हममें से अधिकांश लोग इतिहास से जानते हैं, ईसा के लगभग 70 वर्ष बाद, विजेता टाइटस, जनरल टाइटस यरूशलेम आया और उसे नष्ट कर दिया। और इसका परिणाम यह हुआ कि सभी यहूदियों को यरूशलेम में रहने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। वह नगर उनके लिये वर्जित था।

यह यहूदी प्रतिरोध आंदोलन को हमेशा के लिए कुचलने का एक तरीका था। और उसी की मान्यता में, रोम में टाइटस का आर्क आज भी मौजूद है। और निःसंदेह यह एक प्रवेश द्वार है, एक प्रतीकात्मक प्रकार का प्रवेश द्वार जिसे यरूशलेम पर रोमन विजय का सम्मान करने के लिए बनाया गया था।

और जो यहूदी लोगों को दर्शाता है और जो इस मेहराब पर यरूशलेम को दर्शाता है वह एक मेनोराह है, जो जीवन के इस वृक्ष का प्रतिनिधित्व करता है या नीतिवचन जो कहता है उसका प्रतिनिधित्व करता है ज्ञान है, कैसे जीना है यह जानने का ज्ञान। इसलिए, हम कभी-कभी सोचते हैं कि हमने जीवन के वृक्ष को खो दिया है। ठीक है, हाँ, क्योंकि हमने अच्छे और बुरे को जानते हुए, भगवान की तरह बनना चुना है, यह एक सार्वभौमिक प्रतिक्रिया है जो हमारे भीतर है।

अब हमारे पास जीवन के वृक्ष तक पहुंच नहीं है, लेकिन भगवान ने हमें छुड़ाने, हमारे कपड़े धोने और हमें जीवन के उस वृक्ष में वापस लाने का एक तरीका ढूंढ लिया है जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखते हैं। लेकिन इस बीच, जीवन का एक पेड़ है और वह यहीं पाया जाता है। यह उन बुद्धिमानों की शिक्षाओं में पाया जाता है जो कहते हैं कि यदि आप इस मार्ग पर बने रहे, तो अंत जीवन होगा।

यदि हम उस रास्ते से भटक गए तो अंत मृत्यु है। जैसा कि मूसा ने कहा, मैं तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु रखता हूँ।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकिल हैं। यह सत्र संख्या छह है, जीवन के वृक्ष के रूप में बुद्धि। नीतिवचन 3.13-20.